त्र हिंदु हैं। १ श्री देवकीजीना पट्पुत्रनी

ALTO

मूलम्हा ज्यना जयसक्षणोन् संप्रह.

आ पुस्तक समारनी असारता द्वार्यमान है।बार्या सर्व केशने भणवा बांचवा माटे उपयोगी जाणीने ठपावी प्रसिद्ध करनार

बालाभाइ छगनलाल शाह

नेन पुस्तक प्रसिद्ध करनार तथा वेचनार. है, कीकामबनी पाछ-अमहाबाद,

माहति योगी पर **१**१०

सम्म १९७७ सने १९२।

किम्मत त्रण आना,

なないと

7





PREISIE.

नवीन खुझ खबर.

महारे त्यां जनपर्मनां, तत्व ज्ञातनां, अध्यातमां अने दरेक जातनां पूस्तका जध्यावंध घणाज फायदेशी मळे छे. माटे अपारे त्यां आवतुं अलता नहीं. अमारे। पुस्तका मसिद्ध करवाना तथा वेचवाना वहीवट घणा जुनामां जुनो अने शसिद्ध छे.

अपारे त्यांथी लायबेरीजा, पुस्तकालया जनशाळाओने सार्क घणाज फायदेथी पूस्तका माकलवामां आवे छे. वधु विगत माई सूचीपत्र एक आनानी टीकीट बीडी मंगावयुं.

एटखुं तो निर्विवाद छे के

जेनां अझानरुपी पडळ खुळां यवानां होय, देशनो, केामनो अने स्वपरने। उदय ए जेमने। उदेश होय, उंची स्थितिए चडी कांइ पण कीर्तीनां कार्यो करवानुं जेना नसीवमां होय, संतानोने देशना वीरा बनाववाने जेनुं निशान होय, अने आ असार संसारने छोडी सुक्ति मेळवी जीवन साफर्य करवानुं होय तेनेन उत्तम पुस्तको बांचवानुं मन थाय छे.

> बालाभाइ छगनलाल ाहरा. पुस्तको पगट करनार ने वेबनाए. ठे. क्रीकाभटनी पोळ, अमद्यावाद

गूजरात विद्यापीठ ग्रंथालय

[गुजराती कॉमीराअट विभाग]

अनुक्रमांक ६ ८५१) वर्गाक पुस्तकनुं नाम हिंप ३१ जा २१२५ अली २१२

भू अभू हावाह भू श्रीकां तिनाचाय नमोनमः ॥ ॥अथ श्रीदेवकाजीना षट्पुत्रनो रास प्रारंभः॥

॥ दोहा ॥

॥नेमजिणंद समोसत्या, त्रण्ये काखना जाण॥ जित्वक जीवनें तारवा, प्रभु बोख्या ख्रमृत वाण ॥१॥ वाणी सुणी श्रीनेमीनी बूझ्या उए कुमार ॥ मात पितानें पूडीनें, खीधो संयम जार ॥१॥ वेराग्यें संयम लीठ, धर्म सामग्री नीव॥ उठ उठने पारणे, प्रभु कर दीठंजावजीव ॥ ३ ॥ निरंतर तपस्या करे, उए महोटा ख्रणगार ख्राङ्गा लेइ जगवंतनी, करे ख्रातम उद्धार ॥१॥ नेम जिणंद समोसरा, द्वारिका नगरी म जार॥ एक दिन उठने पारणे, वयरागी ख्रणगार॥ ५॥

ा ढास पहेली ॥

॥ वीर वखाणी राणी चेखणा ॥ ए देशी ॥
॥ श्वागना खेइ जगवंतनी जी, वए ते बंधव सार
॥ गोचरी करवाने नीकछ्या जी, द्वारिका नगरी मजा
र ॥ साधुजी जखें रे पथारिया जी ॥ १ ॥ ए खांक
षी ॥ अनेकसेन खादे करी जी, वए सरिखा खण

गार॥ रूप सुंदर ऋति शोजता जी, नख कुबेर अनु हार ॥ साण ॥ २ ॥ त्रण्य संघाने करी संचखा जी, मुनिवर महा गुणधार ॥ ईरिया समितियें चाखतां जी, पट कायने हितकार ॥ सा०॥ ३ ॥ पाके पाके फिरतां थका जी, गोचरीयें मुनिराय ॥ मुनिवर दो य तिहां ऋाविया जी, वसुदेवजीना घरमाँय ॥ सा० ॥ ४ ॥ देवकी देखी राजी हुइ जी, जर्से पधास्त्रा मु निराय॥ सात त्राठ पग साँहमा जइ जी, लळी ल ळी लागेजी पाय॥ सा० ॥ ५ ॥ हाथ जोमीने वंद न करे जी, तरण तारण मुनिराय॥ दरिसण दीग स्वामी तुम तणां जी, जव जयनां दुःख जाय ॥ सा० ॥६॥ आज जली रे जागी दिशा जी, धन्य दिवस माहरो त्याज॥ मुनिवर स्थम घर स्थाविया जी, तर ण तारण जहाज ॥ सा० ॥ ७ ॥ मुह माग्या पासा ढब्या जी, दूधने वूठा मेह ॥ आज कृतारय हुं यह जी, आणी घणो धरम सनेह ॥ सा० ॥ण॥ मोद क थाल जरी करी जी, वहोराव्या उखट भाव ॥ क्र श्र जिमण तणा खावीनें जी, देवकी हर्षित थाय॥ साण ॥ ९ ॥ जाताने वसी पोहोंचाफीयां जी, मुनि वर गया पोल बार॥ योमीसी वार॥ हुइ जिसेजी,

वली ख्राव्या होय ख्रणगार ॥ सा० ॥ १० ॥ देवकी राणी मन चिंतवे जी, जूखी गया हे ऋणगार ॥ व कीय पुएयाइ हे माहरी जी, भूछें ख्राव्या दुसरी वार ॥ सार्ण ॥ ११ ॥ सात त्र्याठ पर्ग सामी जाइने जी, ्लळी लळी लागेजी पाय ॥ त्र्याज कृतारय हुं चइजी, मुनिवर धस्त्रा घर पाय ॥ सा० ॥ १२ ॥ मोदक थाल जरी करी जी, वहोराव्या इसरी वार ॥ क्रश्न जिमण तणा खावीने जी, हैयमे हरष ऋपार ॥ सा॰ ॥ १३ ॥ जाता नें वली पोहोंचाविया जी, मुनिवर रूप खगा-ध ॥ योमीसी वार हुइ जिसें जी, त्रीजे संघामे त्रा-व्या साध ॥ साव ॥ १४ ॥ देवकी तव राजी हुइ जी, मन मांहे जपनो विचार॥ श्राहार नवी मख्यो एह ने जी, के जूखें छाव्या छाएगार ॥ सा० ॥ १५ ॥ भू-ख्यानुं तो कारण ए नहीं जी, दीसंता महोटा ऋण-गार ॥ तीसरी वार ए खावीया जी, नहीं ए तो साधु ्याचार ॥ सा० ॥ १६ ॥ रूपकला ग्रेण यागला जी, दीसंता सम आकार ॥ पहेलां जो पहने पुछशुं जी, तो नहीं से अम घर आहार ॥ सा॰ ॥ १९ ॥ मोदक थाल जरी करी जी, वहीराव्या तीसरी वा-र ॥ क्रश्न जिमण तणा सावीने जी, देवकी मन

प्राव उदार ॥ सा॰ ॥ १० ॥ सर्वगाथा ॥ १३ ॥ ॥ दोहा ॥

॥ मुनि प्रलें प्रतिलाजिने, निरखी मुनि दीदार ॥ मनमां संशय जपनो, ते सुणजो सुविचार ॥ १ ॥ वात ए अचरज सारखी, मुखशुं कही न जाय ॥ क-ह्या विण स्वाद न नीपजे, विण कह्यं केम रहेवाय ॥ १ ॥ देवकी एम मन चिंतवी, प्रणमी बे कर जोमी ॥ साधु प्रत्यें पूछती हवी, आलस अलगुं होमी ॥३॥

> ॥ ढाख वीजी ॥ ॥ राग गोमी ॥ मृगापुत्रनी देशी ॥

॥ मुनिवर नगरी द्वारिका जी रे, वार जोयणने मान ॥ क्रश्न नेरसर राजीयो जी रे, जेहनी त्रण खंक श्राण ॥ मुनिसर एक करुं श्ररदाश ॥१॥ ए श्रांक-णी ॥ बहोतेर क्रोक घर बाहेर हे जी रे, मांहे हे सा-ह करोक ॥ स्रोक बहु सुखीया वसे जी रे, मांहे राम कृश्ननी जोक ॥ मुण ॥ १ ॥ खाख क्रोकांरा धणी वसे जी रे, नयरीमां बहु दातार ॥ माहरे पुण्य तणे छद-थें जी रे, मुनिवर श्राव्या त्रीजी वार ॥ मु० ॥३॥ व-कीय पुण्याइ हे ताहरी जी रे, एक बोख्या मुनिराय ॥ देवकी मनमां जाणीयुं जी रे, एहने खबर न कांय

॥ मु० ॥ ४ ॥ हुं पूढुं इए कारणे जी रे, साधां न ली धो खाहार ॥ माहरे पुण्य तणे जदय जी रे, मुनिवर त्र्याच्या त्रीजी वार ॥ मु० ॥ ५ ॥ मुनिवर उत्तर एम कहे जी रे, नयरीमां बहु दातार ॥ त्रण संघामाशुं निकछा जी रे, अमें ठए अएगार ॥ मु० ॥ ६ ॥ व खतो मुनिवर एम कहे जी रे, तुं शंका मत आण ॥ ताहरे पहेंखा वहोरी गया जी रे, ते मुनिवर डुजा जा ण ॥ देवकी लोज नहीं हे कांय ॥ ए त्र्यांकणी ॥ ७ ॥ देवकी मन अचरिज थयुं जी रे, ए किए मायें जाया रे पूत ॥ रूप सुंदर ऋति शोजता जी रे, मुनिवर का कंमी जूत ॥ मु० ॥ ए॥ आमी करीने एम कहे जी रे, सांजलजो मुनिराय ॥ उत्पत्ति तुमारी किहां ऋढे जी रे, ते दिन मुज बताय "मु० ॥ ए॥ कोण नयरीथी नीकट्या जी रें, तुमे वसता कोण प्राम ॥ केहना ठो तुमे दीकरा जी रे, कहेजो तेहनुं नाम ॥ मु० ॥ १० ॥ नाग शेवना अमे दीकरा जी रे, सुलसा अमारी माय ॥ जिह्नेखपुरना वासिया जी रे, संयम खीघो ठए जा य ॥ मु० ॥११॥ बत्रीशे रंजा तजी जी रे, बत्रीश ब त्रीश दाय ॥ कुटुंच मेख्यो अमे रोवतो जी रे, विस वि ख करती माय ॥ मु॰ ॥ १२ ॥ सर्वगाया ॥ ३० ॥

।। दोहा ॥

॥ मुनि वचन श्रवणे सुणी, चिंते चीत मजार॥ एहवो परिवार तजी करी, खीधो संयम जार ॥ १ ॥ हाथ जोमीने वीनवे, सांजळजो मुनिराय॥ किस्या पुःखथी तुमे निकख्या, ते दियो मुज बताय॥ १॥

॥ ढाख त्रीजी ॥

॥ खम खम मुज ऋपराध ॥ ए देशी ॥ ॥ जातो काल न जाणतां सांजल रे बाइ॥ रहे ्तां महोल मजार ॥ दास दासी परिवारद्यं जी, वली बत्रीश बत्रीश नार॥सांजल रे बाई, म करीश मन जन्नाट ॥ ए ऋांकणी ॥ १ ॥ जगवंत नेम पधारिया ॥ सां ॥ साधुनें परिवार ॥ त्र्यमें जगवंतने वांदिया जी, वली सुर्णीयो धर्म विचार ॥ सां० ॥ म० ॥१॥ वाणी सुणी वैरागनी ॥ सां० ॥ जाण्यो ऋचिर संसा र ॥ सुख जाण्यां सहु कारमां जी, ऋमें खीधो संयम जार ॥ सां० ॥ म० ॥ ३ ॥ चार महात्रत स्त्राद्रया ॥ सां० ॥ चारे मेरु समान ॥ ॥ त्यजी संसार संयम लीयो जी, दीधो **उकायनें अजयदान ॥ सां**ण ॥ मण ॥४॥ माता मेखी श्रमे जूरती ॥ सां० ॥ तजी बन्नो शे नार ॥ सघला चलवलतां रहा जी, में तो छोफ

दीयो संसार ॥ सां० ॥ म० ॥ ५ ॥ उठ उठ नें पारणे ॥ सां० ॥ जाव जीव निरधार ॥ खंतर हमारेको न हीं जी, ठे ए तप तणो विचार ॥ सां० ॥ म० ॥६॥ खाज उठ नें पारणे ॥ सां० ॥ खाञ्या नयरी मजार ॥ दोय दोय मुनिवर जूज्ञा जी, एम खाञ्या त्रीजी वार ॥ सां० ॥ म० ॥ ९ ॥ सर्वगाया ॥ ४९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विक्ष विक्ष की घी वीनित, तुमे महोटा मुनिरा य ॥ घरमां त्रोटो इयो पड्यो, ते दियो मुज बताय ॥१॥ विष्तता मुनिवर बोिलया, तुमे सुणो मोरी मा य ॥ घरमां त्रोटो जे पड्यो, ते देउं तुज बताय ॥१॥

॥ ढास चोथी ॥

॥ पुण्य तणां फल मीठां रे जाणो ॥ ए दशी ॥
॥ उंचा महोल सोहामणा, रिचया विविध प्रकार
रे माई ॥ तद्वद् रूपें सारखी, परणावी बत्रीशे नार
रे माई ॥ पुण्य तणां फल मीठां रे जाणो ॥ ए आं
कणी ॥ १ ॥ परणीनें जब घर आवीयां, सासुने लागी
पाय रे माई ॥ तव वहूने रुद्धि घणी जे, आपी ते
मुज माय रे माई ॥ पुण्यण ॥१॥ बत्रीश कोक सोने
या जाणो, बत्रीश रूपेया सार रे माई ॥ बत्रीश बद्ध

नाटकनां टोखां रुद्धि तणो नहीं पार रे माई॥ पुण्य० ॥ ३ ॥ बत्रीश मुग्रट मुग्रट परवारं, हेम कुंमलनें हा र रे माई ॥ एकावली मुक्तावली जाणो, कनक रयण विखी सार रे माई ॥ पुएय० ॥४॥ बत्रीश हार मोती तणा, बत्रीश रतन तणा जाण रे माई ॥ तीसरा चौ सरा हार अने वली, एम कमगने तुमीय जाए रे माई ॥ पुएय० ॥४॥ बत्रीश सोनाना ढोखीया, बत्री श रूपाना जाण रे माई ॥ बत्रीश सिंहासन सोना ना, इमहिंज कुलश वखाण रे माई ॥ पुण्य० ॥६॥ बन्नीश सोनानी कथरोटी, बन्नीशु रूपानी जाए रे मा ई ॥ बत्रीशे वली तवा सोनाना, तिमहिंज थाल व खाए रे माई ॥ पुएय० ॥ ७ ॥ हय गय रथ दासनें दासी, बत्रीश गोकुल जाण रे माई ॥ बत्रीश सोना रूपाना दीवा, वली आरीसा वलाए रे माई॥ पुएय० ।। वत्रीश पीठ सोना रूपाना, इमहिंज घरेणा ऋ मृद्ध रे माई ॥ पर्गे पमतां सासुचें दीधां. एकशो बाणुं बोलरे माई ॥ पुएयण ॥९॥ एम वए बंधवनी मली ना री, एकशो बाणुं जाण रे माई॥ एकशो बाणुंने रुद्धि ऋपाणी, ऋागम वचन प्रमाण रे माई ॥ पुर्य ॥१०॥ पणी परे अमे सुख जोगवता, निर्गमता दिन रात रे

माई ॥ त्रोटो तो खमने कांइ न हूं तो, ए खमे ठए जात रे जाई ॥ पुण्य० ॥ ११ ॥ सर्वगाथा ॥ ६० ॥

॥ दोहा ॥

।। वारंवार एम वीनवे, तुमे महोटा मुनिराय ॥ वैराग पाम्या किण विधें, ते दीर्च मुज बताय ॥ १ ॥

॥ ढाख पांचमी ॥

॥ ऋरणिक मुनिवर चाख्या गोचरी ॥ ए देशी ॥ नेम जिएंदनी में वाणी सांजली, जाएयो ऋथिर सं-सारो जी ॥ काया मायारे जाणी कारिमी, कारिमो कुटुंच परिवारो जी ॥ १ ॥ मुनिवर जांखे तुं शंका मत करे ॥ ए त्रांकणी ॥ लाख चोराशीरे जीवायो-निमां, जमीयो खनंती वारो जी ॥ जन्म मरण क-रीने घणुं फरिसयो, न रही मणा खगारो जी ॥ मुनि० ॥ २ ॥ करम नचावेरे तेम ए नाचीयो, विविध ब नावी वेशो जी ॥ पातक कोधारे जीवें खति घणां. (पाठांतरे ॥ जन्म मरणे करी बहु वेदन सही,) न वि सुएयो धर्मोपदेशो जी ॥ मुनिष् ॥३॥ एहवी दे शना श्रमे सांजली, जाणी सर्व असारो जी ॥ वए बंधव ततस्वण बुकीया, लीधो संयम जारो जी॥ मुनि ॥ ४ ॥ पुण्यनें जोगेरे नरजव पामीया, लेइ

भर्मनी आथो जी॥ ए सुख जाएया रे अमेतो कारि-मां, की भो मुगतिनो साथो जी ॥ मुनि०॥ ५॥ ए हवा वयणां रे मुनिनां सांजली, देवकी करे विचारो जी ॥ बाखक वयमां रे संयम खाद्रयो, धन्य एहनो श्रवतारो जी ॥ मुनि० ॥ ६ ॥ उप्पन कोकी रे माहे-री साहेबी, सामात्रण कोम कुमारो जी ॥ दीठा स-घला रे माहारा राज्यमां कोइ नहीं इले अनुहारो जी ॥ मुनि० ॥ ९॥ इणेइण वयमां रे संयम ऋाद्यों, पाले निरतिचारो जी ॥ धन्य धन्य माता रे ताहरी कुलनें जाया रत अमुखक सारो जी ॥ साधुजीना दुरिसण दीठां राणी देवकी ॥ ए आंकणी ॥ । ।। अंग उपांग रे सघला सुंदरू, सौम्य वदन सुखराी शो जी कोली पातरां लीधां हाथमां, तनु सुकृमाल मुनि शो जी ॥ साधु० ॥ ए ॥ गज जेम चाले रे मुनिवर मलपता, बोले वचन विचारोजी ॥ राजकुमरनी रे दीजें उपमा, जाए कोइ देव कुमारो जी ॥ साधुक ॥ १० ॥ धन्य धन्य माता रे जेणे ए जनमिया, दर शाणे दोलत थाय जी ॥ नाम लीभाथी रे नवनिभि संपजे, पातक दूर पद्माय जो ॥ साधु ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥त्रामी फरिफरि निरित्वया, धन्य एहनो अवतारः ॥ठए सहोदर सारित्वा, नही देखुं एहने ऋनुहार ॥१॥॥॥॥ ।। ।। ।।

॥ धारणी मनावे रे मेघ कुमारनें रे ॥ ए आंकः णी ॥ नयणे निहाले रे राणी देवकी रे, मुनिवर रूप रसाल ॥ लक्कण गुणें करीने शोजता रे, वाणी जेह नी विशाल ॥ नयण ॥ १ ॥ जिले घरषी ए पुत्र नी-कख्या रे, शुं रह्यो होसे खार ॥ दीसंता दीसे घणु सो-हामणा रे, नस कुबेर अनुहार ॥ नयण ॥ १ ॥ एणे अनुहारे रे माहरा राजमां रे, अवर न दीसे कोय ॥ जो वे तो एक माहरो कृष्ण वे रे, एम मन अवरि ज होय ॥ नय० ॥ ३ ॥ सीधुं सगपण कोइ दीसे नहीं रे, माहरुं हवणां जेम ॥ सूधी खबरज कोइ न वी पर्ने रे, एम किम जाग्यो माहरो प्रेम ॥ नय॰ ॥ ४ ॥ श्रावकनो साधुने जपरें रे, होवे हे भरम सने ह ॥ में घणा दीठा सांघु पूरवें रे, ठ शुं जांग्यो केम पूरव नेहु ॥ नयण ॥ ए ॥ जातां दीठां राणी देवकी रे, घणुं यह दिलगीर ॥ हियनुं फाटे तेहनु ऋति घणुं रे, नयणे विद्धे नीर ॥ नय० ॥ ६ ॥ स० ॥ ७ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ बाखपणे बोख्यो हतो, श्रइमंतो श्रणगार ॥ श्राठ जणीस बाइ देवकी, बीजी नहीं जरत मकार ॥ १ ॥ एहवा पुत्र जनम्या विना, केम थाये श्राणं द ॥ माहरे संशय ठे घणो, ते जांगे नेम जिणंद ॥श॥ देवकी मन सांसो थयो, जइ पूढुं इणी वार ॥ केवल ज्ञानी मन तणा, संशय जांगण हार ॥ ३ ॥ एम चिंतवी राणी देवकी, वंदण श्री जिनराय ॥ सा मग्री सर्व सजी करी, हरष भरी मन मांय ॥ ४ ॥

॥ ढाख सातमी ॥

हारे लाल शीयल सुरंगा मानवी ॥ ए देशी ॥ हारे लाल चाकर पुरुष तेमावीन, देवकी राणी बोले वाण रे लाल ॥ किण्पामेव जो देवाणुप्पिया, तुं रय वेगो जातराय रे लाल ॥ नेम वंदणने जायशुं ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ हारे लाल चाकर सुणी हर्षित थयो, गयो जिहां यानशाल रे लाल ॥ तिहां जहनें सज्ज कर्यो, रथ रूको विसराल रे लाल ॥ नेम० ॥ १ ॥ ॥ हां० ॥ चार उतावली अति घणी, वली उपगरण हलवां जाण रे लाल ॥ वाहिरली उवठाण शासमें रथ उजो राखी आण रे लाल ॥ नेम० ॥ ३ ॥ हां०

धोलानें माता घणां, वली ठोटी सींधमीत्रा जाण रे लाल॥ दीसे घणुं ए सोहामणा, एहवा वृषज तुं त्रा ण रे लाख ॥ नम० ॥ ४ हां० ॥ सरिखाने चांदी नही, जोवा सरखी बखदनी जोम रे खाख ॥ चाखे चांख उतावली, जेहनें शिंगे पुंठे नही खोम रे खाख ॥ नेम० ॥५॥ हां० बखद्नें जूखां शाजती, वस्ती सो नानी नाथ रसाख रेखाला। सोनानी जली शिंगमी, वर्खी गले ते घूघर माल रे लाल ॥नेम० ॥६॥इां०॥ खेंचित सोनानी रासमी, वखी सोना पट्टाला जोत्र रे लाल ॥ माथे ते घाल्यो सेहरो, तुं एणीपरें कर जयो त रे खाळ ॥नेम०॥०॥हां० वली ते रथ राणगारीयो, ते सूत्रें वे विस्तार रेखाख॥ बखद जुगतशुं जोतरी, लाञ्यो उवहाण शाला मजार रे लाल ॥ नेम०॥०॥ हांगा न्हाइ घोड मद्धान करी, वस्ती पहेरया नव नवा वेश रे लाल।। माणिक मोती मुद्रिका, वली घरेणा हार विशेष रे खाख ॥ नेम० ॥ ए ॥ हां० ॥ आर्मवर क री ऋतिघणो, ऋावी बेठा रथ मांय रे खाख ॥ ऋाग ल बांधी शीकरी, रथ बेठी दढ थाय रे लाल॥ नेमण ॥ १० ॥ हां० ॥ साथे ते खीधी साहेखीयां, वळी षाद्या ते मध्य बजार रे खाख । यतुर ते बेठो सांध

की, ए यहस्थानो खाचार रे लाल ॥ नेमणा११॥ ॥ दोहा ॥

॥नगर मध्ये यइ नीकल्या, साथ बहु परिवार॥ ने मजिणंद जिहां समोसरर्या, चाल्या तिण हिज ठार॥१॥ ॥ ढाख स्थाठमी ॥

धजाने पताका हो दीठा राणी देवकी रे प्रज ऋतिशयनी वात॥ विनयतो ऋाद्री हो उत्तम साधुनो रे, एतो जगत विख्यात ॥ १ ॥ सांसो निवारो हो प्र जु नेमजी रे ॥ ए त्र्यांकणी ॥ रथने उपरथी हो हेठे कतरी रे, दासीयोनें परिवार॥ पायनें ऋणु ऋाणे हो राणी देवकी रे, साचवी अजिगम सार ॥ सांसो० ॥ २ ॥ देइ प्रदक्तिणा हो वांद्या नेमजी रे, पांचे ऋंग नमाय ॥ दो गुमा दो ढिंचण हो जूतलें थापीनें रे म स्तक ग्रूंड लगाय ॥ सांसो० ॥ ३ ॥ उए मुनि देखी हो संशय जपनो रे, हुं एम थह रे छदास ॥ सांसो तो निवारण हो कारण आवीया रे, नेम जिलेसर पास ॥ सांसो० ॥ ४ ॥ ग्रुण व्यनंता हो प्रजुज तुम तणा रे, जो होये जीजनी अनेक ॥ राग देव बेहुनें हो स्वामी निवारीया रे, सह माथे मन एक ॥ सांसी० ॥ ५॥ भन्य दिवस हो भन्य वेखावनी रे, जेट्या तर

ण तारण ऊहाज ॥ मनना मनोरथ हो प्रजुजी मा हरा रे देखी रे, रह्या हो महाराज ॥ सांतो० ॥६॥ ॥ दोहा ॥

॥ देइ प्रदक्षिणा वांदता, बोख्या श्री जिनराय॥ जिण कारण तुमें आवियां, ते सुणजो चित्त खाय ॥१॥ नेम कहे सुणो देवकी, सांसो उपनो तुक्त ॥ उप मुनिवर देखीने, तुं पुत्रण आवी मुक्त ॥ १॥ तहित कहे तब देवकी, जोमी दोनुं हाथ ॥ हा स्वामी सांसो पड्यो, ते जांगो जगनाथ ॥ ३॥ ए उए ताहरा दीकरा तुं शंका म करे कांय॥ उप वोरण जे आवीया, तेहनी तुं वे माय॥ ४॥

॥ ढाख नवमी ॥

॥ रूके रूपरे पुत्र तुमारा राणी देवकी॥ ए आं कणी ॥ तीन संघाने तुम घर मुनिवर, आव्या त्रीजी वार ॥ ते देखीने सांसो पनीयो, उए एकण अनुहार ॥ रूके० ॥ १ ॥ नागशेठ सुलसा घर विधया, मकरो शंका लगार ॥ देवकी राणी ताहरा जनम्या, नल कु बेर अनुहार ॥ रूके० ॥ २ ॥ नही निश्चें सुलसाना जाया, मानो वात अमारी ॥ उदर तमारे ए आवी या, नहीं कोइ मात अनेरी ॥ रूके० ॥ ३ ॥ किण

विध पुत्र द्यमारा प्रजुजी, जोमी दोनुं हाय ॥ एजा यानुं मरम न जाणु ते जांखो जगनाथ ॥ रूके० ॥ ॥ ४ ॥ जीवयसा ताहरी जोजाइ, बोली ते ऋण वि मासी ॥ ऋइमंतो रूषि आवंतो देखी, तेहनी कीधी हांसी ॥ रूपे० ॥ ५ ॥ धन जोवनने मदनी माती, बोली ते खोटी रीत ॥ त्रावोनें ऋइमंता मुनिवर, म-लीने गाइयें गीत ॥ रूमे० ॥ ६ ॥ मुरखमी गीतानी मानी, खबर परे शी थारी॥ देवकी गरन जे सातमो थाशे, ते तुज कुलक्तय कारी ॥ रूमे० ॥ ९ ॥ जरा संघनी तुं यइ पुत्री, कंस तणी धणीयाणी ॥ मारुं बोल्यं पाइं न फरे तें ते वात न जाणी॥ रूमेण ॥८॥ एहवां वचन सुणीनें काने, कंसने जाइ पुका री ॥ त्र्यप्टमंते रूपिये वचन कह्यां जे, ते मुजने पुःख कारी ॥ रूने० ॥ ए ॥ तेह वयण सुणीनें कंसें की धो एक उपाय ॥ वसुदेव पासे बोलज लीधो देवकी गर्ज जे याय ॥ रूमे० ॥ र० ॥ ते वालक तो अमध र वाधे, तव माने वसुदेव॥ कंसराय तिहां राजी हु र्ड, सुख जोगवे नित्य मेव ॥ रूमे० ॥ ११ ॥ जे जे गर्ज धरे हे देवकी, तब तिहां ते कंसराय ॥ सात चो की ते उपर मूकी, कपटें खेखे दाय ॥ रूमे० ॥ १२ ॥

दोहा,

॥ तिण काले ने तिण समे, जिह्ने लपुर हे गाम नागरोठ ते तिहां वसे, सुलसाघरणी नाम ॥१॥ धणकण कंचण हे घणो, रूद्धितणो नहीं पार॥ पण मृतवहा ते सही, शोचे हृदयमजार ॥१॥ तव ते होरु कारणे, हरिणगमेषी देव॥ आराधे ते एक मने, निस्य निस्य करती सेव॥३॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ केटले काले सेवा करतां, तूनो देव तिहां आय रे जाइ ॥ किए कारए तुं मुजने सेवे, शानी हे तुज चाय रे जाइ ॥ १ ॥ पुण्य तणांफल मीठांरे जाणो ॥ ए आंकणी ॥ वलती सुलसा एणी परे बोले, जो मी दोनी हाथ हो देवा॥ जिल कारण में तुजने आ राष्यो, ते सुणजो तुमे नाथ हो देवा ॥ पुण्यण ॥श। धनतो माहरे जरिया जंगारा, तेहनी गरज न कांय हो देवा ॥ मुवा बाखक जीवता थाय, ते मुज आपो वाय हो देवा ॥ पुण्यव ॥ ३ ॥ वसतो देवता एणीप रे बोखे, तुं सांजल मोरी वाय रे माइ॥ मूवा बाल क जीवता होवे, ते मुज शक्ति न कांय रे माइ॥ पु एय०॥ ४॥ वलती सुलसा एणीपरे बोले, सांजल

मोरा जाय हो देवा ॥ मूवां वालक जो तुजधी न जीवे, तो द्यो अवर उपाय हो देवा ॥ पुण्यव ॥ ५ कोथलीमां जे नाणु घाले, तेटलुं ते निकलाय रे मा इ ॥ पूरव पुण्यना संचजो होवे, तो सवि वातुं थाय रे माई ॥ पुण्य० ॥ ६ ॥ वलती सुलसा एणो परेबो खे, सांजल तुं चित्त खाय हो देवा ॥ तुठो पण **ऋ**ण तूठासरखो, माहारी गरज सरी नही कांयहो देवा ॥ पुष्य० ॥ ७ ॥ वखतो देवता एणी परे वोले, तुमे सुणजो चित्त ठाय रे माइ ॥ ततकालना जे वालक जनमे, ते तुजनें देउं खाय रे माइ ॥ पुएय० ॥ ७ ॥ वसती सुससा एणी परे बोसे, सांजल तुं सुखदाय हो देवा ॥ हुं शुं जाणुं तुं केहनां खावे, ते मुजनें न सुद्वाय हो देवा ॥ पुण्य० ॥ ए ॥ कंसराय जे मारण माग्या, देवकी केरा नंद रे माइ ॥ ते तुऊने हुं आ र्षी देइरा, करी देशां आनंद रे माइ ॥ पुएयणारणा क्षुलसा सुणीने राजी हुइ, देव गयो निज ठाणरे मा इं श्रवधिज्ञाने विचारी जोवे, श्रवुकंपामन श्राण रे माइ ॥ पु० ॥ सर्वगाया ॥ १३१ ॥

॥ दाहा. ॥

॥ देवकीने सुखसा तणा, गर्भ समकाखे कीष ।

जनम समय जाणी करी, तुज कुमरां तेणे लीध॥१॥ ते लेइ सुलसाने दीया, कुमर ऋति सुकुमाल॥ मृत क बालक सुलसा तणां, ते देव लीये ततकाल ॥१॥ ते लेइ तुज पासे ठव्या, छए एणी परे जोय॥ निद्रा मुकी गर्भ पालटचा, ते नवी जाणे कोय ॥३॥ मृत क वालक कसे लीया, ते जाखे सहु कोय ॥ उए कुम र महोटा थया, जणी गणी पंक्ति होय ॥४॥ बत्रि श वित्रश कन्या वस्था, एक लगन सुखकार ॥ पंच विजय सुख जोगवे, दोगंदक ऋनुहार ॥ ५ वाणी सुणी वैरागची, वये खियो संयम जार ए वयेपुत्र वें ताहरा, तुं शंका म कर खगार ॥६॥ तव शंका सहुए टेली, वांदो नेम जिएंद ॥ साधु समीप ऋा व्या सही, ऋाणी घणो ऋाणंद् ॥ ७ ॥

॥ ढाल अगीरआमी ॥

॥ धन्य धन्य जे मुनिवर ध्याने रम्यां जी ॥ए देशी॥
॥ देवकी ते खावी नंदन वांदवा जी, हैयके उल्ल सि हरिषत थाय रे ॥ निज वाठरुखाने देखी करी रे जेम नव प्रसूता गाय रे ॥ देव० ॥१॥ ए खांकणी॥ देह प्रफूखी तिहां खति घणी जी, रोम रोम उल्लसी तन सार रे ॥ त्रटके तो जुटी कश कंचुखा तणी रे

स्तने विज्ञूटी घुधां केरी धार रे देव ।। १॥ बख हैयामांहे तो माने नहीं रे, जोतां लोचन तृति न थाय रे ॥तन मन रोमांचित हैयनुं जल्लस्युं रैं, नज र न पाछा खेंची जाय रे ॥देवण।३॥ एहं सहोदर दीवा सारिखा रे देवकी तो रही सामी निहाख रे नेत्र जरिया आंसुमाथकी रे, जाले त्रूटी मोति केरी माल रे ॥ देव ।।।।।।वली नीज श्रंगजने निरखी करी जी उद्घरयो अति घणो घणो नेह रे ॥घर जातां प ग साहामा वहे नहीं जी, फरी फरीने वांदे तेह रे ॥ देव०॥ ५ ॥ वांदी जगवंतने जखे जावशुं जी,दी **ठा वेठानें** उभाय रे ॥ अधन्य अपुण्य अकृत चिंतवे रे, मोहवरेाथी पुःख याय रे ॥ देव 🛮 ॥ ६ ॥ घरे स्रा वीने राणी देवकी जी, खार्त्तरौंड मन ध्याय रे॥ एहवे अवसरे कृष्णजी आविया रे, माताना वांद वा पाय रे ॥ देव० ॥ ९ सर्वगाया ॥ १४५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कृष्णे दूरची देखीया, आज खरी दिलगीर ॥ पगे खाग्यो जाप्यो नहीं, नयपो जरे तस नीर ॥१॥ कहो माता किपो दुह्व्या, केपो खोपी तुज कार ॥ वसी वसी कृष्णजी विनवे, पण उत्तर नदीये सगार ॥१॥ हाथ जोकी माधव कहे, सांजलो मारी माय॥ तुजने वात कह्या विना गरज न सरहो कांय ॥३॥

॥ ढाख बारमी॥

॥रहो रहो राजेसरा केसरीया खाख ॥ ए देशी॥ हुं तुज त्रागल सी कहुं कानैया लाल, वितक दुःख नीवातरे ॥ गिरधारी लाल ॥ दुःखणीनारी हे घ-गा। । कानैया लाल ॥ पण दुःखणी नारी मात रे ॥ गि० ॥ हुं ।।। ए त्र्यांकणी ॥ १॥ जनम्या में तुज सारि खा ॥ का॰ एकखनालें सातरे ॥ गि०॥ एके दुखरा व्यो नहीं ॥ का० ॥ गोदलेइ किए मात रे गिँ० ॥ हुं ॥ १ ॥ ए ठये वाध्या सुलसा घरे ॥ का ० ॥ हुं नजरे खावी देख रे ॥ गि० ॥ वात कही प्रज नेमजी श का० ॥ जिएमें मीन न मेष रे ॥ गि० ॥ हुं० ॥ ३ वए तो नाग घरे उछर्या । का०॥ सुलसानी पूरी आस रे॥ गि०॥ राजकृद्धि बोकी करी का० में दीका लिधी प्रजुपास रे ॥ गि० ॥ द्वं ४ ॥ ठ ए तोहवे ख्रलगा रह्या ॥ का० एक ख्राव्यो तु म हारे पास रे ॥ गि० ॥ तुजने में नवी साचव्यो ॥का० माहरे ब्याच्यो तुं उठे मास रे ॥ गि० ॥ ५ सोल वरस ऋलगों रह्यो ॥ का० ॥ तुं पण यमुनानें

तीर रे ॥ गि० ॥ नंद यशोदाने घरे ॥ का० ॥ नाम थरावी खाहीर रे ॥ गि० ॥ हुं ॥ ॥ ६ ॥ सोछ वर स ठानो वध्यो ॥ का० ॥ पठी उघड्यां त्हारां जा ग्य रे ॥ गि० ॥ जल यमुनामें जाइने ॥ का० ॥ तें नाध्यो काली नाग रे॥ गि०॥ हुं०॥ ७॥ बालपणा ना बोलमा॥ का॰ में एके न पूरी त्याश रे॥ गि॰ खाशा विहूणी हुं रही ॥ का० ॥ जारे मुझ्सत्रा न व मास रे ॥ गि० ॥ हुं० ॥ ए ॥ हलक न दीधो हा लरो ॥ का० ॥ पालणीयें पोढाय रे ॥ गि० ॥ हाल रुया गावा ताणी ॥ का० ॥ माहरी होंश रही मन मांय रे ॥ गि० ॥ हुं० ए ॥ जगमां मोहटी मोह नी ॥ का० ॥ उदय यह माहरे आज रे ॥ गि० ॥ ते जीव जाणे माहरो ॥ का० ॥ के जाणे जिनराय रे ॥ गि० ॥ हुं ॥ १० ॥ त्रांगणीयें न करी घनी ॥ का० ॥ त्र्यांगँखीयें वलगाय रे ॥ गि० ॥ साही सा ही ना मिख्या ॥ का० ॥ हुं जाचण केम कराय रे ॥ गि० ॥ हुं ॥ ११ ॥ कीथाँ याद आवे नहीं ॥ का० में केइ करम कठोर रे॥ गि०॥ जवांतरे कीथां हरो ॥ का० ॥ मेंकिहां पाप अघोररे ॥ गि० ॥ हुं० ॥१२॥ के पंत्री माला त्रोमीया ॥ काण ॥ के बाल विद्यो हा कीध रे॥ गि०॥ जीव जयणा कीधी नहीं ॥का० के कूमा खालमें दीध रे ॥ गि० ॥ हुं ॥ १३ ॥ में जीवाणी ढोलीयां ॥ का० ॥ के में मारी जूं लीख रे ॥ गि० ॥ तमके जीव में शेकीया ॥ का॰ बहु जीव की घो संहार रे ॥ गि० ॥ हुं० ॥ १४ ॥ किवन कर्म ते में कीयां ॥ का० ॥ के तोकी सरावर पाल र ॥ गि० ॥ ठां शे विंठी चांपीया ॥ का० ॥ न करीमें शील संजाल रे ॥ गि० ॥ हुं ॥ १५ ॥ पांतिजेदज में कीया॥ का० ॥ ईषी निंदा शराप रे ॥ गि० ॥ का मनी गर्जज गालीया॥ का • ॥ के में कीथां प्रौढां पा परे॥ गि०॥ हुं॥ १६॥ ऋणगल नीर में वावरयां॥ का०॥ के में पाक्या ऋंतरायरे॥ गि०॥ के सा धुने संतापीया ॥ का० ॥ ते फल त्र्याव्या धाय रे ॥ गि० ॥ हुं० ॥ १७ ॥ सर्वगाचा ॥ १६५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ माता वयण श्रवणें सुणी, तव ते यादव राय ॥ हाथ जोनी विनयें करी, बोले मधुरी वाय ॥१॥ पूर्व संबंधी देवता, तेनावुं मोरी माय॥ ताहरा मनो रथ पूरका, करीस हुं एह उपाय ॥ १॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ चंडाजलानी देशी ॥ वलता कृष्णजी एम कहे हो, माजी म करो चिंता खगार ॥ जेम तुम नंदन यायशे हो, तिम हूं करीश विचार ॥ तिम हूं करीश वि चार रे याइ, मनमें चिंता म करो कांइ॥ देजो मुकने मलीय वधाइ, जब जनमे माहारो न्हानो जाइ॥जीउ माताजी जीर्र ॥१॥माता चरण नमी करी हो, त्याव्यो पौषध शाल ॥ हरिणिगमेषी देवता हो, मन समयोंत तकाल ॥ मन समर्यो ततकाल मुरारी, अञ्चन जक्तज चित्तमें धारी ॥ देवता आवी कहें तिए वारी, एहवो क ष्ट किर्ड केम जारी॥जीर्ड कानाजी जीर्ड ॥२॥ देव कहे क्रुष्णजी प्रते हो, केम तेमाव्यो मुज ॥ कारज कहो मुजने सही हो, जे करवुं होये तुज ॥ जे करवुं होये तुज काम भारी, खमे ठउं तुजने जपगारी॥ खादेश यो अमने सुलकारी, काम कहोने ते शुजसारी ॥ जीर्च कानाजी जीर्च ॥ ३ ॥ देव प्रत्ये कृष्णजी कहे हो, सुणो तुम चित्त धार ॥ लघु वांधव माग्रं सही हो, कृपा करा हरिएगमेषी सार ॥ कृपा करो हरिए गमेंवी सारी, होने बालक खीखाकारी सुख पामे ज्युं मात स्प्रमारी, जाद्व कुलमांहे जयजय कारी

जीर्ज देवाजी जीर्ज ॥४॥ देवकी नंदन त्यारमो हो, जेम थाये तेम जेम ॥ इण कारण तुम समरियो हो ठर नहीं कोइ प्रेम ॥ ठर नहीं कोइ प्रेम हमारे,बा खकनी खीला चित्तमें भारे॥ एह स्त्रीने होये जग त्राधारे, पुत्रने देखे माता जिवारे ॥ जीस्रो देवाजी जीख्रो ॥५॥ ख्रवधिज्ञानें प्रयुंजीनें हो, देव कहे तेणी वार ॥ देव खोकथी चवी करी हो, देवकी कुखें अ वतार ॥ देवकी कुखे खवतारज थाशे, सवा नवमा स जेवारें थाशे ॥ पुत्र जनम्याथी सुख पाशे दरिस ण जेहनो सहुने सुहारो ॥ जीखो कानाजी जीखो ॥६॥ जरजोवन वय पामरो हो, पूत्र होरो महा महोटो ॥ पण दीक्षा खेरो सही हो, वचन नहीं स्त्रम खोटो॥ वचन ऋमारो खोटो न थाइ, मातानें ऋात्री दीध व भाइ ॥ माता हीयमे हर्ष न मावे, कृष्णजी मनमां स्थानंद पात्रे ॥ जीस्रो माताजी जीस्रो ॥ ९ ॥ वस्रता कृष्णजी एम कहे हो, सांजलजो मोरी माइ ॥ देवरूप कुंवर होशे हो, देजो मुज वधाइ॥ देजो मुज वधाइरे माता, पुत्र होशे, तुम जगत विख्याता॥ मनमां राखो तमें सुखशाता, माताजी थाशे मुज खघु श्राता ॥ जी श्रो माताजी जीश्रो ॥ । ।। वयण सुणी कृष्णजी तणां

हों, जपन्यो मन आनंद ॥ वखती देवकी एम कहे हो, तुं तो मुजकुल चंद ॥ तुंतो मुजकुलचंद रे भाई माहरी चिंता दूर गमाइ॥ कृष्णे संतोषी निज माइ, पत्नी सुख विलसे त्यावासे त्याइ॥जीओ कानाजीजी आर्था। एगे अवसर देवथी चनी हो, देवकी उदर उपन्न ॥ सिंह सुपन देखी करी हो मनमां हुइ सुप्रसन्न ॥ मनमां हुइ सुप्रसन्न सोजागी जाइपी उर् युने पूढवा लागी ॥ पीयु कहे सुण तुं वमजागी, पूत्र होशे तुम गुणनो रागी॥ जीखो माताजी जीखो॥१०॥ तेइ वचन देवकी सुणी हो सुखमां गमावे काल सवा नवमासं जनमियो हो, कुंखर खति सुकुमाल ॥ कुंद्यर ऋति सुकुमाल देखीने, नाम दीयो गज सुकु माख हरषीने ॥ इरष पामे देवकी निरखीने रीजे सहु कोइ गुण परवीने॥ जीखो कुंद्यरजी जीखो ॥१९॥ हवें माता निज पुत्रशुं हो, रमे रमाने वाल ॥ मनना मनोरथ पूरवे हो, हाथो हाथ विसाख ॥ हाथो हा थ विसास रे बाइ, रमाने माता हरख उमाइ॥ हा **स्टरीमा हुस्टरीमा गावे, दिन गमावे राजी थावे ॥ जी** ख्यो कूंबरजी जीख्यो॥ १२ ॥ गजसुकुमाख महोटो थ यो हो, बहु उत्तरंगे जणाय ॥ रूप विचक्तण जाणी नें हो, सोमलघर मनाय ॥ सोमलघर विवाह मना यो, देवकी माता आणंद पायो ॥ दिन दिन वाघे ते ज सवायो, जातो न जाणेकालगमायो ॥ जीओ कुं अरजी जीओ ॥ १३ ॥ सर्वगाथा ॥ १८० ॥

॥ दोहा ॥

॥ इणें अवसर श्रीनेमजिन, करता उम्र विहार॥ जिनक जीन प्रतिबोधता, बोडनता संसार ॥ १ ॥ ए क दिन नेम पधारिया, सोरठ देश उदार ॥ द्वारिका नयरी आनिया, नंदन ननह मकार ॥ श आज्ञा लेइ ननपालनी, उत्तरिया तिणे ठार ॥ संयम तपें करि जानता, बहु गुण तणा जंमार ॥ ३ ॥

॥ ढाल चउद्मी ॥

॥ राणपुरो रिल्रियामणो रेखोल ॥ ए देशी।।
॥ नेमजिणंद समोसर्या रे॥ लाल, निलोंजी नि
मीय रे॥ जिनकजन ॥ द्रशनदीने तेहनुं रे लाल,
जव जवनां पुःख जाय रे॥ ज०॥ १॥ नेम जिणंद स
मोसर्या रे लाल ॥ ए आंकणी ॥ सहस अढारे साधु
जी रे लाल, साधवी चालीश हजार रे॥ ज०॥ निज
आणाने मनावता रे लाल, शासनना शिरदार रे॥ ज०॥
॥ ने०॥ २॥ चोत्रीश अतिशयें विराजता रे लाल,

पांत्रीश वाणी सार रे ॥ भ० शुभ लक्षण सोहाम णां रे लाल, ब्राठने एक हजार रे ॥ ज० ॥ने०॥३॥ प्रभु दर्शन देखी करी रे लाल, हरषे वांद्या पाय रे॥ जि ॥ वनपासक जतावसो रे सास, कृष्णपासें ते जा य रे ॥ ज० ॥ ने० ॥ ४ ॥ वनपालक आवी करी रे खाख, जोकी दोनुं हाथ रे ॥ त० ॥कृष्णनरेसरने क ेंहे रे लाल, सांजलजो नरनाथ रे॥ सुग्रणिजन॥ ने० 💵 ५ ॥ दरिसण जेहेनुं इच्छता रे खांख,करता मनमें चाह रे ॥ ज० ॥ पीयरीया ठकायना रे खाख, श्रीने *सि* जिनराय रे ॥ ज**० ॥ने०॥६॥ नाम गोत्र सुणी** रीजता रे लाल, धरता मन अभिलाष रे ॥ ते श्री नेम पधारिया रे लाल, वनपाले एम दाख रे ॥ जि ॥ ने ॥ ७ ॥ दीजीये देव वधामणी रे लाल, पा मी मन आणंद्रे रे ॥ ज०॥ तेह वयण सुणी करी रे खास, तव हरख्या गोविंद रे ॥ ज० ॥ ने० ॥ ८ ॥ ·**ट्या**सनथी तव जठीयो रे खाख, सात आठ पग सामो जाय रे ॥ त० ॥ प्रभुने की धी वंदना रेखाख, पढीवे हो निज हाय रे॥ जल नेल ॥ ९॥ कृष्ण दीधी वधामणी रे खाल, बोले मधुरी वाण रे ॥सुगुणिज न ॥ सोनैया दीधा सामटारे लाख, साढी बारे खाल रे सु० ॥ने० ॥१०॥ वनपालकनें विदा करी रे ला स पढ़ी चाकरनें तेमाय रे ॥मु०॥ कीमुद्दी जेर वजा मीनें रे लाल, सांजली सहु सज्ज्ञ थाय रे ॥मु०॥ने० ॥११॥ जहां रे लोको सितावशुं रे लाल, रखे अवे ला थाय रे ॥मु०॥ एक घनी दर्शन विना रे लाल क्षण लाखीणो जाय रे ॥ मु०॥ ने० ॥ १२ ॥ कोइ कहे दिरसण देखशुं रे लाल, कोइ कहे मुणशुं वाण रे ॥ मु०॥ कोइ कहे संशय बेदस्यां रे लाल, कोइ कृत्हल जाण रे ॥ मु०॥ ने०॥ १३ ॥ स० ॥१९३॥ ॥ दोहा ॥

॥ एम विविध परें चिंतवी, बहु नारीना बृंद् ॥ स्नान करी शिणगारीया, मनमां धरी आणंद ॥१॥ नगर मध्यें थइ निकल्या, चढी हय रथ गयंद्॥पंच अभिगम साचवी, वांद्या नेमजिणंद ॥२॥

॥ ढास पंद्रमी ॥

श्रीसुपास जिनराज, तुं त्रिभुवने सिरताज ॥ए देशी॥
॥सोरठ देश मजार, द्वारिका नगरी सार, त्रा
ज हो वसुदेव रे राजा राज्य कर तिहां जी ॥१॥
जाइ दशे दसार, बखजद कान कुमार, त्राज हो दीप
रे सोहागण राणी देवकी जी ॥ २॥ तसु खबु पुत्र

रसाल, नामे गजसुकुमास, आज हो मात पिताने वा सहो कुंवर प्राणयी जी ॥३॥सुणी स्राव्या नेमजिणंद साथें सुरनर बृंद, ऋाज हो सेव्यां रे सुखदायक स्वा मी समोसखा जी ॥४॥ जादव बहु परिवार, मन धरी हर्ष खपार, खाज हो कृष्णादिक सह उठरंगें जस्या जी ॥५॥ करी बहु अति माम, वंदन नेमी स्वाम, त्याज हो गजसुकुमाल ने साथें लेइनें जी ॥६॥ विधिशुं वांदी जिनपाय, तव ते दोनुं जाय, ऋाजहो धर्म कथा कही बहु विस्तारद्युं जी ॥८॥ देशना सु णी तेणी वार, बुज्यां सहु नर नार, आज हो वांदी रे व्रत यहीनें निज निज घर गया जी ॥९॥ वाणी सुणी ऋष्णराय,वांदी जिनवर पाय, आज हो जेम आव्या तेम निज नगरें गयाजी ॥१०॥ स० ॥२०८॥

॥ दोहा ॥

जिन वाणी श्रवणे सुणी, बूज्यो गजसुकुमाल ॥ घरे आवी माता जणी, बोले वचन रसाख ॥१॥

ा ढाल सोलमी ॥

॥मदी यमुनाके तीर उमे दोय पंखीया ॥ ए दे

र्शा ॥ वाणी सुणी जिनराज तणी काने पनी ॥रेमा मी खंतर हेयमानी खांख माहेरी उघमी॥वलती मा ता बोसे दुंबारी ताहेरी ॥ रेजाया ॥सुणी ए प्रभुजी नी वाणि युण्याइ पूरी ताहरी ॥१॥ कही श्री जिन राज ते साची में सईही॥ र माइ॥ खागी मीठीजेम साकर इधने दही ॥दी जें अनुमति मुज संयम लेशुं सही, न करो ब्याज्ञानी ढीज पुत्रें ऐसी कही ॥२॥ त्र्याज सजामां जैनधर्म वखाण्यो जिनवरें, मुजने रु च्यों व तेह वेह पुःखनो करे।। ए संसार असार के बार समी लख्यों, जन्म मरण पुःखकरण जल ए जालें धरुयो ॥३॥ श्री जिनमारग ठारण कार ण उंलख्यो, ए विना अवर न कोइ सकल शास्त्र ल रूयो॥ कारागार समान आगार विहार हे,तजवो कों इकवार आखर पहेलां पठे ॥४॥ एक इहां आणगा र पणुं सुखकार हे, माता यो अनुमति वात न को करवी अठे ॥ नंदन वचन सुणो एम जननी जलफ ली, हित वाणी पुःख छाणी जावे यह गलगली ॥५॥ वोणी ऋपूरव वात पुत्रनी सांजली, घणुं मू जीगत थाय धसकी घरणी ढली॥जांगी हाथांरी चू न माथे केश वीलर्या, बजी हुन्त्रो ओठणो दूर धस

की धरणी पडचा ॥६॥ मोह तणे वश आय सूरत जांखी चड़, शीतल वाय सचेत थड़ बेठी जड़ ॥ कुं श्चरनां मुख साहमुं रहीने जोवती, मोह तणे वश बोसे माता रोवती ॥ ७ ॥ तुज मुख माहेथी वच्छमा णी ए केम पनी, माहरे हे तुज्जिपर आशा अति व की ॥ हूं मूखयी तुज नाम न मेळुं अध घको, रे जा या तुं जीवन अंघा लाकनी ॥ ८ ॥ चारित्र छे वत्स पुकर असी यारा सही, सुरिगिति तोख वो वांह के तर वो जलदाहि॥ उपामी लोह भार के गिरि चडवो व ही, तुं सुंदर सुकुमाल पाल केम थिर रही ॥ ९॥ दोष बेंतालीस टाली करवी गोचरी, भमवुं जमरा जे म चिंतामाने लोचरी ॥ कनक कचोठा ठोफ लणी वत्स काचली, जाव जीव लगे वाट न जोवी पाछली ॥ १० ॥ जे इह लोके ऋासंस के परखोके परमुहा कायरने कुपुरुषने ए सविदुछहा ॥धीर वीर गंभीरने शी दुकर कहा, मान करी ए वात बीहावो शुं मुहा ॥ ११ ॥ परीसह केरी फोज छावी जब लागरा, संय म नगर सभाव कोट तब भांगशे ॥ तहारे वह तुज जोर कांइनहीं फावशे, पुत्र अमारुं ताम वचन मन व्यावशे ॥ १२॥ कोटे शुज मनोरय सुभट बेसाम्हां,

सत्य रूप पनकोट तेमांहे समारशुं ॥ समता नालें ज्ञा न गोला जरी मारशुं, पिसह केरी फोज आवंती वा रशुं ॥ १३ ॥ राग द्वेष दोय चोर जोरावर बूटरो, पु एय खजानो माल अमूलक छूटरो ॥ कांत्युं पींज्युं व त्स कपासते थायरो, मन केरी मनमांहे के होंस स मायरो ॥ १४ ॥ पहेरी उत्साह सन्नाह पराक्रम धनु ष बही, थिरसा पण्छ वैराग के बाण पुंखी करी ॥ साहमांपहली मुठें हणशूं ते सही, वीरजननी तुज नाम कहावीरा ते वही ॥ १५ ॥ सर्वगाया ॥२२४॥

॥ दोहा ॥

॥ वलती माता इम कहे, जोगवो जोग संसार॥ भुक्त जोगी हूळा पढी, लेजो संयम जार ॥ १॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ माकण मूंडालो ॥ ए देशी ॥ सांजल रे मारी माता, एतो विषयारस इ:खदाता हे ॥ निज मन सम जाय लो ॥ मन समजाय लो मोरी माता, एतो जनम मरण इ:ख दाता हे ॥ निज० ॥ १ ॥ जेणे न कियो धर्म खगार, तेतो पहोता नरक मजार हे ॥ निज०॥ जे के कीधां एणे संसार, ते तेहनी खावे खार हे ॥

निज॰ ॥२॥ इण भव पीका पावे, तेतो मृख कोय न मि टावे हे ॥ नि० ॥ कुटुंब मिली सह स्रावे, पण पुःख कोय न वेहेंचावे हे ॥ निज्ञण ॥ २ ॥ तो परजव कु ण त्र्यासी, जीव कीधां पाप पुएष वासी हे ॥नी०॥ ते एकलडो दुल पासी, बीजो ख्रामो कोइ न घासी हे ॥ निज॰ ॥ ४ ॥ इण जनयी हुं डरियो, खख चो राशीमां फरियो हे ॥ नि०॥ वाल मरणे हूं मरियो, वार अनंती अवतरियो हे ॥ निज० ५ ॥ रमणी रंग पतंग, नही पाले त्रोत अभंग हे ॥नि०॥ रमणी करावे बहु जंग, तेहशुं कुण करे संग हे ॥ निज॰ ॥ ६ ॥ एमां जे प्राणी माच्या, ते तो मूरख कहीये जाचा हे ॥ नि० ॥ इण संसाररो जगनो कूनो, मेंतो जिन मारग पायो रूको है ॥ निज० ॥ ९ ॥ हुं राचुं न हीं एमां उंडो, जेम पांजरामांहे सूमी हे ॥ निज० ॥८॥ माताजी अनुमति दीजें, घेमी एकनी ढीख न कीजे है ॥ नि० ॥ माताजी मया करीजे, जेम मुज कारज सीजे हे ॥ निजण॥ ए॥ श्री नेमीसर पारा, हुंतो पुरीश मननी आश है।। निणा मायें जा एयो क्रुंखर उदास, करेवली उत्तरतासहे।। नि॥१०॥

॥ दोहा ॥

॥ धनादिक भहु मंत्रवी, उत्तर परुत्तर बहु कीध ॥ ते विस्तार तो वे घणो, ख्रंतगड मांहे प्रसिद्ध॥१॥ वसती कहे राणी देवकी, रे पुत्र तुं छघुवेश॥ संय म पुक्तर वे सही, तेतुं केम पालेस॥ १॥

॥ ढाल ऋढारमी ॥

॥ लावर दे मात महार ॥ ए देशी । वही एम कहे छुमार, त्र्याणी प्रेम त्र्यपार, त्र्याजहो अमीयरे स माणी वाणी सांभली जी ॥ १ ॥ उपनो मन वैराग, संयम उपर राग, ऋाजहो धन सज्जन सहु दीसे का रिमो जी ॥ २ ॥ में जाखो सर्व असार, एकज धर्म आधार, आजहो वेकरजोडी मातानें एम वीनवे जी ॥ ३ ॥ माता विताना पाय, प्रणमें सुत सुखदाय, आजहो अनुमति दीजे माता मुज जणी जी ॥श॥ सुण वत्सतुं लघुवेश हूं केम देर्च उपदेश, आजहो सुत पाले मावडी एकेंद्री किम रहे जी ॥ ५ ॥वच न अपुरव एह, श्रवणे सुएया गहगेह, खाजहो जल जर नयणे बोले राणी देवकी जी ॥ ६॥ ते पुत्र न पाले दिरक, पालवी सुग्रह शीख, आज हो घर घरनी

जिक्षाजमंता दोहिली जी ॥ ७ ॥जावजीव निराधार चालवुं खांना धार, त्याजहो वावोश परिसह बलवंत जीतवा जी ॥ ८ ॥ शाख दाख घृत गोल, कोण देशे तंबोल, आजहो केशरीये वाघेरे कस कोण बांधरो जी ॥ ए ॥ नित्य नवा वस्त्र सिणगार, करवा मनोहर आहार खाजहो खरस निरस खाहारनें मेलां काप डां जी०॥ १०॥ सहेज विडाइ फूल सार, तोहे ना वे निंद खगार, आज हो माम संघारे सुबुं दिन दिन दोहिलुं जी ॥ ११ ॥ पीवुं उनुनीर,सेहेवुं पुःख शरी र आज हो भुजायें करीनें सागर तरवों दोहिलो जी ॥ १२ ॥ बावल देवी बाथ, लोह चला लेइ हाथ, च्याज हो मीण तणे र दांते चावण दोहिलो जी ॥ १३ ॥ वखतो कुमर अवीह, वचन कहे जेम सिं इ, आज हो कायरनुं हीयडुंरे कंपे अति घणुं जी ॥ १४॥ हुंतो सिंह जैम शूर, पाछुं संयम पुर, आठ हो चारित्रपासी शिवरमणी वहं जी ॥ १५ ॥ इंद च द नरिंद, दाणव देव मुणिंद, आज हो अथिर संसा रमें सबस केइ आचडे जी ॥ १६ ॥ तीर्चकर गणधा र, वासुदेव चकी सार, आज हो पहवा वीरपणा ची र कोई ज़िव रहा। जी ॥ १७ ॥ तो अवरां कुण वात

एम अवधारो मात, आज हो मोह निवारण शाजा मानी मुज तणो जी ॥१८॥ तो शुं अलंत स्नेह, ए क् जीव दोय देह, आज हा तुज विहुणी माता केम रहे जी ॥१५॥ तुं मुज जीवन प्राण, कीकी काज ल समान, आज हो उंबर फूल परें सुणतां दोहिलो जी ॥ १० ॥ इष्ट कंत पीयु मोय, तुं मुज विसामो होय, आज हो मुज मन वाल्हो ऋति घणो तुं सही जी ॥ २१ ॥ तुं पुत्र नाहनो बाल, केलि गरज सुकु माल त्याज हो जोग योग्य हे त्रवस्था ताहरी जी ॥ १२ ॥ रूप कला गुण पात्र, निरुपम निरमल गा त्र, त्र्याज हो सोमलरी बेटी परणो पदमणी जी ॥२३॥ मीठी प्रजु ऋमृत वाण्, में कीधी मात प्र माण, त्याज हो मायाशुं मन मोरो उतरी गयो जी ॥ २४ ॥ जाएयो मे ऋथिर संसार, लेशुं संयम जार, खाज हो मात मया करी अनुमति मुजने आपजो जी ॥१४॥ पर्वे लेजो संयम जार, खाँदरजो खाचा र आज हो कन्या विचक्षण परणो खानकी जी ॥ १६ ॥ पुत्र मुज मन हुंति चाख, जाणुं रमामीश बास, खाज हो तुज उपर मुज खाशा हे घणी जी ॥ २९ ॥ मात पितानें भाय, घणुंक मोह लपटाय,

श्चाज हो कहुं रे न माने कुंत्र्यर सुखक्षणो जी ॥२०॥ घणुं रे थइ दिसगीर, नयणे विद्युटे नीर आज हो विलाप करे हे वसुदेव देवकी जी ॥ २९ ॥ हसधर माधव जाय, ततक्षण विगर बुखाय, आज हो मधुर वचनशुं माधव एम कहे जी०॥ ३०॥ टाखुं जाइ ता हरुं पुःख, वलसो मनोहर सुख, आज हो वायवि ना पुरुष निवारं ताहरं जी ॥ ३१ ॥ जनम मरण वारों मोय, सुख मानी रहुं तोय, त्याज हो दुःख ह रण सुख करण तुमें वांधवा जी ॥ ३१ ॥ देव दाण व इंडराय, ए केणेंही न मिटाय, आज हो कर्म क्षय यकी सहुए टखे जी ॥ ३३ ॥ क्षय करवा निज कर्म, लेशुं संयम धर्म, स्राज हो स्रनुमतिदीजे बंधव मुज प्राणी जी ॥ ३४ ॥ कृष्ण कहे एम वाय, सुण सुण मोरा जाय, आज हो राजे बेसाइं द्वारामितनुं ए स ही जी ॥३९॥ वरतावुं ताहरी ऋाण, करुं हुं हुकम प्रमाण, त्याज हो त्याणा वरतावुं सघले ताहरी जी ॥ ३६ ॥ मीन रह्या तेणी वार, कृष्ण हरख्या निर भार, आज हो सङ्जन परिवार सहु राजी हुवा जी ॥ ३७ ॥ करवा ते कृष्ण काज, खेइ वेसाडया राज, श्राज हो हुकम पदावे गज सुकुमालनो जी ॥ ३८ ॥

कृष्ण कहे एम वाण, राय हुकम प्रमाण, आज हो हाथ जोडीने केशव एम कहें जी ॥ ३० ॥ वरतावो माहरी त्राण, करो हुकम परिमाण, त्राज हो दीक्षा महोत्सवरी खब तङ्खारी करो जी ॥४०॥ स्वजंका र खोलाय, तीन खाख नाणुं कढाय, आज हो वेगे रे मंगावो रजोहरण पातरा जी ॥ ४१ ॥ नारायण तेमहिज कीध, खाज्ञा सेवकनें दीध, खाज हो मग्री सरवे संयमनी सज्ज करे जी ॥ ४२ ॥ कुंअरनें निश्चल जाण, माता अमृत वाण, त्याज हो त्याशीष दीये वे राणी देवकी जी ॥ ४३ ॥ धन्य दाहाको मा हरो त्याज, सफल फल्यां मुज काज, त्याज हो चरण ना शिष्य याशुं श्रीनेमनायनां जी ॥ ४९ ॥ वाजांने नीशाण, बेसारी शिबिका आण, ऋाज हो आणीनें सोंप्या वे श्रीजगनाथनें जी ॥ ४५ ॥ रहेती एहनें तंत, हुंतो इष्ट्रनें कंत, आज हो तुमनें रे सोंपुं बुं प्रभु जी शिष्य जाणी जी ॥४६॥ प्रभुजीयें दीका दीघ कुंत्र्यर नुं कारज सीध, आज हो माता पिता रे कुंअर प्रत्येक हे जी ॥४७॥ धरजो मन शुजध्यान, दिन दिन चमते वान, आज हो सिंह तणी परें संयम पालजो जी ॥४८॥ तव ते देवकी नार कहे प्रभुने वारवार, आ ज हो तप करतां एहने तमें वारजो जी ॥४९॥ ए णे ए जवह मजार, दुःख निव दीतुं खगार, आज हो देव तणा परें सुखएणे जोगव्यां जी ॥५०॥ भु रूयां तरक्यानी चाह, करजो एहनी संजाल, आज हो जाखवजो एहनें रूनीपरें घणुं जो ॥५१॥ माहरी हती पोथीनें आथ, ते दीधी तुम हाथ आज हो जेम जाणो तेम हवे तमे राखजो जी ॥५१॥ स०॥ २०५॥

॥ दोहा ॥

॥ एम कही पाठा वह्या, देवकीने परिवार ॥ पठी कृष्ण पण वांदीने, पहोता नगर मकार ॥ १ ॥ प्रभुजीयें दीक्षा देइ, शीलव्यो सर्व ख्राचार ॥ प्रभु पासें विनयें करी, जएयो ख्रंग इग्यार ॥ २ ॥ इर्या स मिति शोजता, थया गज अणगार ॥ ठकाय ताली रक्षा करे पाले पंचाचार ॥३॥

शहा कर पाल प्राचार गरा।

॥ ढाल र्जगणीशमी॥

॥ सोरठ देश सोहामणो॥ ए देशी॥

दीक्षा दिन प्रभु वांदीने, मशाणे संध्याकाल रे
॥ पिनमा ठाइ कालस्सग्ग रह्यां तिहां सोमल आव्यो
चाल रे॥ सोजागी शुकल ध्यानें चढयो॥ए ख्रांकणी
॥१॥ मुनि देली वेर ल्लस्यो, थयो कोपांतर काल रे

विण खवगुण मुज पुत्रीनो,जनम खोयो ते खाल रे ॥सो०॥श॥ एम बहु रीसे परजली बांधी माटीनी पा ल रे ॥ केसु वरणा माथे धस्वा,धगधगता खेर ऋंगा र रे ॥ सो० ॥ ३ ॥ तापें तुंबनी खदखदे, फनफन फूटे हाम रे ॥ चाम चमचमे नसा तड तमे, छोही वहे निल्लाम रे ॥ सो० ॥ ४ ॥ धीर वीर मुनिध्यान चड्या, करें निज धर्म संजाल रे॥ जे दाजे ते माह रुं नहीं, पण नाप्यो मने करी काल रे ॥ सो० ॥ ४॥ **अनादि कालनो जीवनो, कस्बो प्रवृतिनो संग**रे॥ पुद्गल रागे रीजीर्ड, नव नवें ते रंग रे ॥सो०॥६॥ कुमति सेनानें वश पड्यो, जीव रह्यो तुं संसार रे ॥ **अनादि कालनो भूली गयो, हवे करो** निज विचार रें ॥ सो ॥ ७ ॥ सुमति निवृति श्रंगी करी, टाली श्वनादि जपाधि रे ॥ कमा नीरे श्वातम सिंचीयो, श्राणी परम समाधी रे ॥ सो ॥ ७ ॥ श्रपूरव कर ण गुक्रध्याननो, त्रीजों पायो क्तपक श्रेण रे ॥ परम शुक्क बेदया वरी, तो शुं वार्क्षे अग्नि तृण क्षीण रे ॥सो०॥ ९॥ घाति कर्म खपावियां, टाड्यो कर्म वि कार रे ॥ करम टाखी केवल खही, पहोता मुक्ति म कार रे ॥ सो० ॥ २० ॥ केवल महोत्सव सुरें कस्त्रो.

पठी पूठयो देवकी मोरार रे॥ सुर वृत्तांत सवे कह्यो, ते सूत्रें वे विस्तार रे॥ सो०॥ ११॥ सात सहोद र मुक्ति गया, वांदी नेम जिएंद रे॥ नित्य एहवा मुनि संजारिय, ब्रहियें परमानंद्र रे ॥ सो० ॥ १२ ॥ भरम दलाली कृष्णें करी, खरच्युं डव्य **ऋ**पारे रे ॥ चार तीर्थनें साह्य करी वाली वधामणी दीधी सार रे सो ॥ १३॥ तिणे तीर्थंकर गोत्र बांधीयुं, सु णजो सहुनर नार रे॥ त्रीजीथी निकली स्त्रमम ना में, जिन होशे जग त्र्याधार रे ॥ सो० ॥ ॥१४॥ कर म खपावी केवल लही, पहोंचशे मुक्ति मकार रे ॥ एहवुं जाणी जे धर्म आदरे, ते लेशे जवजल पार रे सो० ॥ १५ ॥ सर्वगाथा ॥ ३०९ ॥ समात ॥ इती श्रीदेवकीजीना व पुत्रनो रास समाप्त ॥

॥ अथ मूर्खशतक प्रारंभः॥

मूर्व जनमां आ नीचे लखेलां एकसो अपलक्षण मां-हेखा घणांक अपलक्षण दीठामां आवे हे, तेनां नाम-

१ उद्यम करवा समर्थ उता उद्यम न करे.

२ विद्वानोनी सजामां पोतानी प्रशंसा करे

३ वेश्याना वचन जपर विश्वास राखे.

४ पांखकी कृत त्र्यामंबर देखी प्रतीत त्र्याणे.

५ जुगार रमी धन पेदा करवानी आशा राखे.

६ कर्षणयी धन पेदा करवानो संदेहची आणे.

७ निर्वुद्धि वतां महाटा कार्य करवानी वांवा करे.

प विश्वक छतां एकांते कोइ ढंदमां रिसक होय.

ए खहेणुं करी ऋणखपती वस्तु वेचाती छीये.

१० पोते बृद्ध छतां दश वर्षनी कन्या परणे.

११ ऋण सांजख्या प्रंथोनुं व्याख्यान करे.

१२ जगतमां जे प्रत्यक्त वस्तु होय तेने छानी ढांके.

१३ पोतानी स्त्री चपस छतां इर्ष्या राखे.

१४ समर्थ वेरी छतां तेनायी शंकाय नहीं.

१५ धन खापीने पढी पश्चाताप करे.

१६ महोटा कवीश्वरनी साथे विवाद करे.

१७ अप्रस्तावें परवर्जुं बोखे.

१० बोखवाने प्रस्तावें मीन धारण करे.

१ए खाज यवाने अवसरें कखह करवा बेसे.

२० जोजन वेसाये रोष करे.

२१ घणो साज थतो देखी धनने विखेरी मूके.

२२ ज्यां सामान्य भाषा बोखवी जोइयें, तिहां कि ण संस्कृत जेवी जाषा बोखे.

२३ पुत्राधीन पणायें ऋने धने करी द्यामणो थाय. २४ स्त्रीना पीयर पक्तवाला पासे प्रार्थना करे. १५ स्त्रीने हास्यें रीसाणो यको विवाह करे. २६ पुत्र ऊपर रीसाणो थको तेने बंधनमां घाले. २९ कामुकनी स्पर्द्वायें करी दातार थाय. २0 देणदारनी प्रशंसाथी खहंकार करे. २ए बुद्धिना गर्ने करीने हितनां वचन न सांजले.. ३० कुखने मदे करी कोइनी चाकरी न करे, ३१ कामी थको घणुं डुर्क्षज एवं द्रव्य दीये. ३२ ड्रव्य वगेरे जधारे देइने पाढुं मागे नही. ३३ लोजी राजानी पासेथी लाजनी वांठा करे. ३४ प्रष्ट राजा छतां तेनी पासे न्यायनी इच्छा करे. ३५ ऋाप मतलबी साथें स्नेहनी ऋाशा राखे. ३६ प्रष्ट मित्र हते पोतें निर्जयपणें रहे. ३७ कृतव्रनो उपकार करवा माटे प्रयास करे. ३८ नीरस माणसने ऋथें पोताना गुण वेचे. ३९ पोताने समाधि छतां वैद्य खीषध करे.

Ki.

४० पोते रोगी थको क्रपण्य करवा जाय. **४१ लोजे करी पोताना स्वजननो त्याग करे.** ४२ वचनेकरी पोताना मित्रने दुहवे. . ४३ खाजनी वेखाये खाळस करे. ४४ इन्डिवंत बतां त्रिय साथे कलह करे. ४५ ज्योतिषि निमित्तियाना कहेवाथी राज्यने वांबे. ४६ मूर्व साथे एकांत करवामां आदर कर. ४७ दुर्बलजनने पीमवा शूरवीर थाय. ४८ प्रत्यक्त दोषवाली स्त्री साथे राचे रतिसुख करे. थए गुणनो अभ्यास करवामां क्रणेक रागी न होय. २० द्रव्यादि संचय करीने पारके हाथे व्यय करावे. **५१ राजानी प्रशंसा करवा मौन धारण करे.** १२ स्रोकोनी आगल राजादिकनी निंदा करे. ५३ दुःख पने थके दयामणो थाय. ५४ सुलमां वर्त्ततो बतो दुःख दारिद्रने वीसारी मुके. ५५ अष्टप वस्तुनुं रक्षण करवा माटे घणो व्यय करे. ५६ वस्तुनी परीक्षा करवाने ऋषे विष खाय. ५७ धातुवादे करी कमाववा माटे धननो नाश करे. ५८ क्षयरोगी थको सावणना रसीयो बाय.

५९ पोतान मुखें पोतानी महोटाइ करतो फरे. ६० रीशे करी आपघात करवानी इच्छा करे. ६१ निरर्थक फेरा खाय व्यर्थ जमतो फरे. ६१ तीर वागे तो पण उनो उन्नो युद्ध जोया करे. ६३ शक्तिमान सार्थे विरोध करी निश्चित सुवे. 48 स्वल्प धन होय तोपण घणो आमंबर करें. ६५ हुं पंक्तित छुं एम चितवतो वाचाल थाय. ६६ हुं सुजट छुं एवा गर्वथी निर्जय यको रहे. ६७ अतिस्तुतिये वखाण्यो थको उच्चाट आणे. ६८ वढवामना वचन बोखतो मर्म प्रकाशे. ६९ जे दारीड़ी निधन होय तेना हाथमां धन छापे. ७० जे कार्य सिद्ध थवानो संदेह होय तेवा कार्यमां धनव्यय करे. ७१ धननो व्यय करी नामुं करती वेखाये खेखुं जोतां संदेह आणे जे खाटहुं ५व्य केम खरचाइ गयुं? ७१ जे दैव करहो ने याही एवी आज्ञा करी बेशी

रहे परंतु पुरुषार्थ कांड पण करे नहिं. ७३ दरीडी छतो जणजणनी पासें वेसे वाचाल थाय. ७४ बीजाये वार्यो थको जमतुंबीसारी मुके.

७५ ग्रणहीण बतो ख्रापणा कुलने प्रशंसे. ७६ सत्तामां बेठो थको ऋद्ववच्चे जठी जाय. ७७ दूत थइ जाय छोंने संदेशी वीसारी मुके. ७८ जधरसनो व्याधि होयने चोरी करवाना चाले प्रवर्ते. ७ए कीर्त्तिने अर्थे महोटो जोजननो वरो करे. ८० पोतानी प्रशंसा माटे थोडुं जमे भुख सहे ८१ सीमा जयथी याचकने आवतां वारे. ८२ क्रपणताने लीधे अपयश उपार्जन करे. ८३ प्रत्यक्ष दोषवाला माणसनां वलाण करे. ८४ साद घोघरो वतां गीत गावा वेसे. ८५ थोडुं जमे खने जमवानुं खतिरसयुक्त करे, ८६ चाटुक वचन बोलतो साहामानुं निराकरण करे. ८७ वेश्याना जे यार तेनी साथे कखह करे ८८ वे जए मंत्र खालोच करतां होय तिहां तेमनी पासे जइ वचमां उभी रहे.

८९ राजानी प्रसाद पांभ ठते जाएं जे ए प्रसाद म-हारे निरंतर निश्चे रहेशे.

९० अन्याय करीने महोटाइनी वांछा करे.

ए१ धन हीन ठतो जे जे कार्यधनथी थतां होय तेवा तेवा कार्यो करवानी वांछा करे.

९१ खोकोनी आगल पोतानुं तथा पारकुं गुह्य प्रकाश करतो फरे.

९३ कीर्त्तिने अर्थे अजाव्या माणसनो हामी थाय.

९४ जे हितशिक्षा करे, तेनी उपर मत्सर आणे.

९५ सर्व कोइनो विश्वास कर एटखे जेटछुं घोळुं तेट-ब्रुं सर्वें दुधज हे, एम जाणे.

९६ खेाक व्यवहार लोकाचारनी वात न जाणे.

९७ पोते भीखारी बतां जन्हुं जमवा वांबे

९८ पोते गुरु होय, पूज्य होय, महोटो होय, तेम बतां क्रियामां शिथिख थाय,परंतु सक्रियपणे न चाले.

९९ कुकर्म करी निर्लक्ष थाय, लोक लाज न करे.

१०० पोतेज वात करे अने पोतेज हसे.

ए उपर खखेला खक्षणे करी जे युक्त होय ते मूर्ख जाणवा. ए मूर्खनां सो खक्षण कह्यां.

स्ट्रिस्ट्रिस ॥ इति मुर्वेशतकं समातं. ॥ स्ट्रिस्ट्रिस सर्वेस्ट्रिस ॥ इति मुर्वेशतकं समातं. ॥ स्ट्रिस्ट्रिस

श्री वैराग्य शतक भाषांतर कथाओ साथ.

(आवृत्ती चार्थाः)

आ पुस्तकमां घणाज विस्तारणी वार्तारूप अर्थ अने भावार्थ छलवामां आव्यो छे. पसंगे पसंगे वैराग्य उपर अति मुक्तक मुनारनी, छलवामां आव्यो छे. पसंगे पसंगे वैराग्य उपर अति मुक्तक मुनारनी, अहार नात्रानी, हुआवस्थाना दुःख उपर धनासार्थवाहनी विगेरे मोटी मेटी ११ कथाओ आवी छे तेथी आ पुस्तक वैराग्य दक्षाने जागृत करनारा स्त्री पुरुषोने घणुंज उपयोगी थइ पहयुं छे. आ पुस्तकनी दुंक मुद्दतमां पांचमी आवृत्ति थइ छे तेज तेना उपयोगी प्रमाना विशेष खात्री छे. आ पुस्तकनी कीमत एक रुपीओ आठ भाना राखी छे. जोइए तेमणे नीचेना शीरनामे छलवुं. ट्याछ खर्च वी. पी. साथे त्रण आना.

जैन सूत्रो.

विपाक सूत्र भाषांतर-प्रथम स्कंध-दुःस्व विपाकितसमें अञ्चभ कमेंकि फळ दिखाने वाले दुश अध्यनेंका समावेश है. ०-८-छपाशक द्यांग सूत्र-खंड २ जो भाषांतर, जिसमें धर्मको उपासना करनेवाले दश आत्रकेंका इतिहास दिया हैं; ०-३-३ उपासना करनेवाले दश आत्रकेंका इतिहास दिया हैं; ०-३-३ उपासन द्यांग सूत्र-खंड त्रीजो भाषांतर श्री निरयात्रिका कल्पवंडसिया, पुष्कीआ, पुष्क बुळा और विन्दिश नामक उपदेशी केन बासका सार लिखा गया है.

हांचनी पोधीओं मंगाने लायक है.

श्री उतराध्ययन सूत्र, ६-८ ्रगाकात्वाकातुं ३-० आत्मसिद्धिशालः १०० केन दर्शननां मृळतत्वा ०-४ आचारंग स्त्र. संघगर्य ६०० पानाना३-८ सिद्धान्तसार् वैराग्य-वातयः आयार मदिपक १-२ जो १-४ सापाणिक प्रतिक्रमणं ७-१२ जैन पांडमाला ०-१२ ष्ट्रहालायणाञ्चा. ६ हा ०-३ नित्य नियमरी पेर्था आसति सोलंगी जेनी क्र्र कि नक्ला खर्पाछे - 8 सामायिक प्रतिक्रमणम् त्र०-४ छुटकअध्ययने।आ,त्री.०−२॥ः अंत्रसा सतीने। रास.०-४ | दरेकना,

नारकीनां चीत्रानी ब.१-४ नानी युक्तः ०-८ भाउत्तरिः साप्राचीकम्ब ने आसुपृति आयुर्ता नवर्षा. हंसराज बच्छराजनोरास०-८ आनारगम्त्र मृळ साथे भाषांत्र देवकीचा खटपुत्रनी रास ०-३ उत्रयध्यन सुत्र दश्वमाळीक मूळ सूत्र ०-४ र्जन दर्शननां मुळ तत्नो ०-४ जैन स्तृति पकरण संग्रह. आचार प्रदिष भाग १-२ दरहा १-8 जैन कथारत्न कोष भाग 8-2-8-6-0-6

उवरना पुरतके। शिवाय दरेक पुरतको पायदेयी मलबाबुँ ठेकाणुं-ं बालाभाइ छगनलाल जाह.

ठे. कीकाभटनी पोळ, अमदाबाद.